CASE STUDY OF ORGANIC FARMER

युवाओं को दिखाई आजीविका की नई राह

मन में कुछ कर गुजरने का जज्बा हो तो राह अपने आप बन जाती है। इसी जज्बे के साथ कदम बढ़ाने वाले कोटा जिले की सुल्तान पंचायत समिति के डंगावत ग्राम में गांव का प्रगतिशील किसान नरेन्द्र मालव मार्ग दर्शन एवं लगन और मेहनत के बलबूते पर सफलता के शिखर पर पहुँच गया है। युवा किसान के अनुसार यह व्यवसाय काफी लाभप्रद साबित हो रहा है और शकद ने भी जिंदगी में रस घोल दिया है। बचपन से ही खेती में लगा होने के कारण खेती कर बारिकियों की भलीं प्रकार जानने वाले नरेन्द्र ने हायर सैकण्डरी तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद पढ़ाई से नाता तोड़ रोजगार एवं आजीविका अर्जन के लिए पुस्तेनी खेती से नाता जोड़ लिया है। युवा किसान नरेन्द्र ने बताया कि जिले की जलवायु अनुकूल बागवानी एवं खाद्यान्न फसलों की पूरी समझ थी लेकिन मन में कुछ अलग करने की इच्छा थी। आजिवीका के लिए मधुमक्खी पालन को करने का भी मन बना लिया। उद्यान विभाग के अधिकारीयों से सम्पर्क होने पर उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र में प्रशिक्षण लेने

की बात कही। वैज्ञानिक डॉक्टर के. एन. ओझा के मार्गदर्शन से मधुमक्खी पालन की तकनीकी जानकारी प्राप्त की। वर्ष 2004 में अपने खेत पर मधुमक्खी पालन का श्री गणेश किया। अग्रज महेन्द्र कुमार मालव ने बताया 36 वर्ष का हो गया। मात्र 10 वीं तक पड़ा। फिर भी कृषि नवाचार को जीवन ऊर्जा बनाया। फलों में आवँला, नींबू, आम, अमरूद, सब्जियों में गाजर, मूली, आदि। वर्ष 2006 में उद्यान विभाग में फर्म मैसर्स महेन्द्र कुमार कालू लाल नाम से पंजीकृत है। जो प्रतिवर्ष टेन्डर भी डालती है।

बागवानी के बागवान

जैविक खेती कर रहे किसान नरेन्द्र मालव ने मधुमक्खी पालन में ही महारत हांसिल नहीं की बलिक वह एक अच्छे बागवान भी हैं। पुस्तेनी जमीन 40 बीघा थी। उसके बाद 20 बीघा जमीन खरीदी और प्रतिवर्ष 40 बीघा जमीन बटाई पर देते हैं। इस प्रकार करीब 100 बीघा कृषि जोतका लेकर अलग से कृषि करते हैं। 36 बीघा भूमि में नीबू, अमरूद, व आँवले का बगीचा लगाया हुआ है जिसमें करीब 500 पेड़ आवँले के, 600 पेड़ अमरूद के, तथा 325 पेड़ नींबू के लगाये हुये हैं। एवं पपीता का बगीचा भी लगाया हुआ है। परिवार में संयुक्त खेती है। इस कार्य में बड़े भाई महेन्द्र

कुमार मालव कंधे से कंधा मिलाकर सहयोग करते हैं। पिता जी कालू लाल मालव, स्नातक होने के कारण उनका पूरा मार्गदर्शन एवं आर्शीवाद प्राप्त है। फार्म हाउस पर वर्मी कम्पोस्ट इकाई, सोलन पम्प फव्वारा, ड्रीप एवं मिनी स्प्रिंकलर का लाभ

लेकर जैविक खेती प्रारम्भ की हुई है। जैविक खेती के साथ ही इन्होंने औषधीय पौधे भी लगा रखे हैं। साथ ही पशुपालन का खेती से जुड़ाव के बारे में आने वाले किसानों को जानकारी देते हैं। क्योंकि जैविक खेती करने के लिए गोबर की अत्यंत आवश्यकता होती है। जो कि केवल गाय से प्राप्त होता है। गावय से प्राप्त गोबर से जैविक खाद् तैयार कर रहे हैं। एवं गौ मूत्र का उपयोग जैविक किटनाशक बनाने में कर रहे हैं।

पाये अनेक पुरस्कार

1. नरेन्द्र मालव कोटा जिले के पंचायत समिति सुल्तानपुर के ग्राम डांगवाद का एक ऐसा काश्तकार है जिसने मधुमक्खी पालन में कमाल कर न केवल अनेक पुरस्कार प्राप्त किए वरन् इस व्यवसाय से मालामाल भी बन गए।

2. वर्ष 2004 में पहली बार मधुमक्खी पालन से 80 किलो शहद प्राप्त होने पर हौसला बढ़ा और अपने भाई महेन्द्र मालव के साथ 2004–05 में कृषि विज्ञान केन्द्र कोटा से उद्यान विभाग द्वारा आयोजित मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

3. मधुमक्खी पालन से वर्ष 2005 में प्राप्त 30 क्विंटल शहद से करीब सवा लाख रूपये की आमदनी हुई। इसके बाद निरंतर आमदनी बढ़ती रही और वर्ष 2009 में करीब 8 लाख रूपये की आमदनी हुई। इनसे प्रेरणा लेकर क्षेत्र के कई और काश्तकार भी आगे आए।

4. नरेन्द्र मालव को कृषि–बागवानी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए कृषि विभाग ने 'आत्मा' परियोजना के अर्न्तगत पुरस्कृत किया। मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने मार्च, 2010 में जयपुर में आयोजित राज्स स्तरीय कृषक सम्मान पुरस्कार से सम्मानित किया। इससे पूर्व 2007 में व पुनः 2010 में गणतंत्र दिवस समारोह में जिला स्तर पर सम्मानित किया गया।

कट्स द्वारा राजस्थान के 6 जिलों में राजस्थान में जैविक उपभोग को बऐावा देने के लिए परियोजना, स्वीडीस सोसायटी फॉर नेचर कन्जरवेशन, स्वीडन के आर्थिक सहयोग से संचालित की जा रही है। राम कृष्ण शिक्षण संस्थान द्वारा कोटा जिले में परियोजना का संचालन किया जा रहा है। कोटा जिले में प्रो–ओर्गेनिक परियोजना के तहत जिला स्तरीय कृषक आमुखीकरण कार्यशाला का आयोजन 29 अप्रेल, 2014 को एवं 30 अप्रेल, 2014 को प्रायोगिक भ्रमण का आयोजन नरेन्द्र मालव ग्राम पंचायत चौमा में किया गया था जिसमें 50 किसानों की सहभागिता रही। जैविक खेती कर रहे नरेन्द्र मालव द्वारा किसानों के आमुखीकरण के लिए विषय–वस्तु की जानकारी को प्रायोगिक तरीके से दिखाने के लिए स्थान का चयन किया गया था। कृषि विज्ञान केन्द्र में प्रथम दिवस में बताये गये जैविक खेती के लाभों एवं वास्तविकता से रूबरू करवाने के लिए कृषकों को ग्राम डंगावद में ले जाया गया और रूबरू कराया गया।

नरेन्द्र मालव वास्तव में युवाओं को आजीवीका की नई राह दिखाने में सफल हुए हैं।